विवाह योग रिपोर्ट

योग, समय, जीवनसाथी व उपाय — आपकी कुंडली का सम्पूर्ण विवाह-विश्लेषण

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 · 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न · राशि · नक्षत्र	सिंह · वृश्चिक · ज्येष्ठा
लग्न नक्षत्र	पूर्वाफाल्गुनी · चरण 2 (स्वामी शुक्र)
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	18 नवम्बर 2026 · सायं 6:20

॥ पारस वाणी ॥

parasvani · वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है

❖ ✦ ❖

जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुं ड ली प रि च य

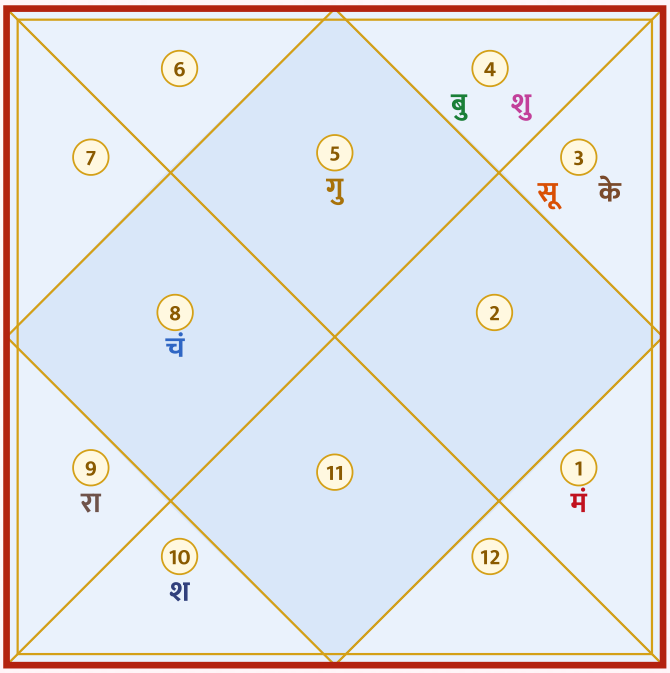

जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) · लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	**सिंह**	**1**	**ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य**
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

❖ ✦ ❖

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अभी चल रही वर्तमान महादशा · वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀
19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	**23/02/2026**	**05/02/2027**
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा
19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

❖ ✦ ❖

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अभी चल रही वर्तमान योगिनी · वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀
स्वामी बुध · 5 वर्ष · 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	**01/03/2026**	**19/02/2027**
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी
स्वामी शनि · 6 वर्ष · 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035

❖ ✦ ❖

विवाह-कुंडली परिचय व भूमिका

अ ध्या य 1

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में विवाह के विषय को समझने के लिए मैं जब सप्तम भाव पर नज़र डालती हूँ, तो एक बात पहले ही स्पष्ट हो जाती है — यह भाव सरल नहीं है, पर असंभव भी नहीं। आइए, पहले यह जानें कि आपकी कुंडली की नींव क्या है।

आपका लग्न सिंह है — यानी आपका स्वभाव आत्मसम्मान, गरिमा और नेतृत्व से जुड़ा है। लग्न-नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी है जिसके स्वामी शुक्र हैं — और शुक्र ही प्रेम, सौंदर्य व दाम्पत्य के कारक हैं। इसका अर्थ यह है कि आपके स्वभाव में सुंदर, स्नेहपूर्ण सम्बंधों की गहरी चाहत है — यह चाहत कहीं से कमज़ोर नहीं है।

आपका सप्तम भाव कुम्भ राशि में है। सप्तमेश (सातवें भाव का स्वामी) शनि हैं, जो अपनी ही राशि मकर में — छठे भाव में बैठे हैं और वक्री भी हैं। यह पहला महत्वपूर्ण बिंदु है: सप्तमेश अपने ही भाव में नहीं, बल्कि छठे भाव में हैं जो शत्रु, बाधा और देरी का भाव है। इसके साथ ही शुक्र — विवाह के नैसर्गिक कारक — बारहवें भाव में अस्त अवस्था में हैं।

चंद्र राशि वृश्चिक है और नक्षत्र ज्येष्ठा। वृश्चिक और ज्येष्ठा दोनों गहरे भावनात्मक नक्षत्र हैं — आप सम्बंधों में बहुत गहराई से जुड़ते हैं, पर मन को खुलकर व्यक्त करने में समय लगता है।

गुरु — जो विवाह के निर्णय में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं — आपके लग्न (पहले भाव) में बैठे हैं, मित्र राशि सिंह में, और युवा अवस्था में हैं। यह अत्यंत शुभ संकेत है। साथ ही गुरु की दृष्टि सप्तम भाव पर भी पड़ रही है — यह बात विवाह के लिए एक बड़ा आधार बनाती है।

अष्टकवर्ग में सप्तम भाव के शोधित बिंदु केवल ३ हैं — यह कम है, जो बताता है कि इस भाव में गोचर का शुभ फल सहज नहीं मिलता और प्रयास अधिक लगता है।

कुल मिलाकर: कुंडली में विवाह के योग हैं, पर वे सरल राह से नहीं, बल्कि थोड़े संघर्ष और धैर्य के बाद फलते हैं। विस्तार अगले अध्याय में।

❖ ✦ ❖

कुंडली में विवाह के प्रमुख योग

अ ध्या य 2

सप्तमेश शनि — छठे भाव में, वक्री, स्वराशि

सप्तमेश शनि मकर राशि में अपनी स्वराशि में हैं — यह उनका बल देता है। पर वे छठे भाव में बैठे हैं जो रोग, शत्रु और बाधा का भाव है, और वक्री भी हैं। **वक्री ग्रह का फल देर से और अपने ढंग से मिलता है** — यह शास्त्र का नियम है। इसका सीधा अर्थ है: विवाह में देरी की संभावना है, और विवाह का मार्ग कभी-कभी उलझनों से होकर गुजरता है। छठे भाव का सम्बंध यह भी बताता है कि विवाह से पहले

कोई बाधा, मतभेद या परिस्थिति-जन्य रुकावट आ सकती है।

षड्बल में शनि का बल ७.५ रूप है (न्यूनतम ५ से ऊपर), पर अवस्था कुमार है — यानी फल आधा-अधूरा, बनता हुआ। **यह "नहीं मिलेगा" नहीं कहता — कहता है: समय लगेगा।**

शुक्र — बारहवें भाव में, अस्त, शत्रु राशि

शुक्र दाम्पत्य के सबसे बड़े कारक हैं — प्रेम, आकर्षण और विवाह-सुख इन्हीं से मिलता है। आपकी कुंडली में शुक्र बारहवें भाव में कर्क राशि (शत्रु राशि) में अस्त अवस्था में हैं। षड्बल में इनकी अवस्था मृत है — अर्थात इनका फल इस समय अत्यंत क्षीण है।

यह बात यह नहीं कहती कि विवाह-सुख नहीं मिलेगा — यह कहती है कि शुक्र अपनी पूरी ऊर्जा इस जीवन में सहज नहीं दे पाते। **नवांश (D9) में शुक्र सिंह राशि में, बारहवें भाव में हैं** — यह और भी पुष्टि करता है कि दाम्पत्य-सुख पाने के लिए सचेत प्रयास और उपाय ज़रूरी हैं।

गुरु की दृष्टि — सबसे बड़ी राहत

गुरु लग्न में बैठे हैं और उनकी सीधी दृष्टि सप्तम भाव पर पड़ रही है — यह इस कुंडली का सबसे बड़ा विवाह-योग है। गजकेसरी योग (चंद्र से केंद्र में गुरु) भी बन रहा है, जो यश और बुद्धि के साथ-साथ जीवन में गुरु के शुभ प्रभाव को स्थायी करता है। गुरु की यह दृष्टि शनि और शुक्र की कमज़ोरी को एक हद तक संतुलित करती है।

नवांश में गुरु कन्या राशि में लग्न में हैं — नवांश लग्न में गुरु का यह स्थान विवाह के बाद जीवन को स्थिर और अर्थपूर्ण बनाने का संकेत देता है।

मंगल दोष — वास्तविक स्थिति

लग्न-कुंडली में मंगल नवम भाव में हैं। **पारंपरिक मांगलिक गणना में यह भाव मांगलिक नहीं माना जाता** (मुख्यतः लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश से देखते हैं)। चंद्र-कुंडली से मंगल छठे भाव में हैं — यहाँ से भी पूर्ण मांगलिक दोष नहीं बनता। अतः **मंगल दोष की चिंता इस कुंडली में अत्यधिक नहीं है।**

हर्ष विपरीत राजयोग — कठिनाई के बाद उन्नति

आपकी कुंडली में **हर्ष विपरीत राजयोग** है — छठे भाव का स्वामी दुःस्थान में है। इस योग का शास्त्रीय फल यह है कि बाधाओं के बाद अप्रत्याशित उन्नति मिलती है और शत्रु परास्त होते हैं। विवाह के सन्दर्भ में इसका अर्थ है — रुकावटें आएंगी, पर अंततः अच्छा होगा।

मुख्य बातें

- **गुरु की सप्तम पर दृष्टि** — कुंडली का सबसे बड़ा विवाह-शुभ संकेत; गजकेसरी योग का बल भी साथ
- **सप्तमेश शनि छठे भाव में वक्री** — देरी और कुछ उलझन संभव, पर स्वराशि में बल भी है
- **शुक्र अस्त व मृत अवस्था में** — दाम्पत्य-सुख के लिए उपाय व सचेत प्रयास आवश्यक
- **मंगल दोष विशेष चिंता का विषय नहीं** — न लग्न से, न चंद्र से पूर्ण मांगलिक दोष
- **हर्ष विपरीत राजयोग** — बाधाओं के बाद अंततः विवाह-सुख का मार्ग खुलता है

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

जायाधीशः शुभैर्युक्तो दृष्टो वा बलसंयुतः ।
तदा जातो धनी मानी सुखसौभाग्यसंयुतः ॥

सातवें भाव का स्वामी शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो और बलवान हो — तो जातक धनी, मान पाने वाला तथा सुख-सौभाग्य से युक्त होता है।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय १८

❖ ✦ ❖

सप्तम भाव व जीवनसाथी का स्वरूप

अ ध्या य 3

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली का सप्तम भाव कुम्भ राशि में है — और इसका स्वामी शनि छठे भाव में अपनी स्वराशि मकर में वक्री बैठे हैं। यह स्थिति विवाह को सरल नहीं बनाती, पर इसे असम्भव भी नहीं कहा जा सकता — बस यह स्पष्ट है कि आपका विवाह अपने समय पर, अपने तरीक़े से आएगा।

सप्तमेश शनि — छठे भाव में, शक्तिशाली पर परीक्षक

सप्तम भाव का स्वामी शनि है, जो छठे भाव में अपनी स्वराशि मकर में वक्री हैं। वक्री होने के कारण शनि चेष्टा-बल से पूर्ण हैं — यानी वे निर्बल नहीं, बल्कि अपने फल को अपने ढंग से और अपनी गति से देते हैं। षड्बल 7.5 रूप है जो न्यूनतम 5 से काफ़ी ऊपर है, अवस्था कुमार है — फल आधा-पूरा, धीरे-धीरे परिपक्व होगा।

पर छठे भाव में बैठना — जो बाधा, शत्रु और कठिनाई का भाव है — यह बताता है कि **विवाह में देरी, परीक्षाएँ और कुछ उलझनें स्वाभाविक हैं।** सप्तमेश का दुःस्थान में होना इस विषय में थोड़ा अधिक श्रम और धैर्य माँगता है।

शुभ समाचार यह है कि शनि छठे भाव में हर्ष विपरीत राजयोग बनाते हैं — जिसका अर्थ है कि कठिनाइयाँ अंततः आपके पक्ष में पलटती हैं। विवाह में जो देरी या बाधा है, वह भविष्य में आपके लिए एक परिपक्व और टिकाऊ रिश्ते की नींव बन सकती है।

सप्तम भाव पर दृष्टियाँ

सप्तम भाव पर तीन महत्वपूर्ण दृष्टियाँ पड़ रही हैं:

• **गुरु की दृष्टि** (भाव 1 से 7वें पर) — यह अत्यंत शुभ है। गुरु मित्र राशि सिंह में लग्न में बैठे हैं, युवा अवस्था में हैं, और उनका षड्बल 9.49 रूप — इस कुंडली के सबसे बलवान और सर्वोत्तम अवस्था वाले ग्रह। सप्तम पर गुरु की दृष्टि विवाह को अर्थ, धर्म और गुणवत्ता देती है।

• **केतु की दृष्टि** (भाव 11 से 7वें पर) — केतु की दृष्टि सप्तम पर एक विलगाव या अनासक्ति का भाव ला सकती है; कभी-कभी विवाह में एक आध्यात्मिक या असाधारण रंग भी।

• **सप्तम भाव का शोधित अष्टकवर्ग केवल 3 बिंदु** — यह कम है, जो बताता है कि इस भाव में गोचर का शुभ फल सहज नहीं मिलता। विवाह के लिए अनुकूल समय खोजने में थोड़ा अधिक प्रयास लगेगा।

शुक्र की स्थिति — प्रेम और आकर्षण का कारक

विवाह के नैसर्गिक कारक शुक्र आपकी कुंडली में बारहवें भाव में कर्क राशि में हैं — शत्रु राशि में, **अस्त** (सूर्य के निकट)। षड्बल 6.11 रूप (न्यूनतम 5.5 से थोड़ा ऊपर), पर अवस्था मृत — इसका अर्थ है कि शुक्र का फल इस समय क्षीण है।

यह बताता है कि **प्रेम-प्रसंग, रोमांस और आकर्षण का विषय आपके लिए सहज नहीं रहा** — या तो देर से जागा, या एकांत में रहा। बारहवें भाव में शुक्र व्यक्ति को बाहर से दिखाने में संकोची बनाते हैं, पर भीतर से भावनाएँ गहरी होती हैं।

फिर भी, बारहवें भाव में शुक्र एक सूक्ष्म सुंदरता देते हैं — आपका जीवनसाथी संभवतः अंतर्मुखी, कलात्मक या आध्यात्मिक प्रवृत्ति का होगा।

मुख्य बातें

• **सप्तमेश शनि छठे भाव में** — विवाह में देरी व परीक्षाएँ स्वाभाविक, पर हर्ष राजयोग से अंतिम फल शुभ
• **गुरु की सप्तम पर दृष्टि** — विवाह को गुणवत्ता, गहराई और टिकाऊपन देती है
• **शुक्र अस्त, मृत अवस्था में, बारहवें भाव में** — रोमांस सहज नहीं, पर भावनाएँ गहरी हैं
• सप्तम का अष्टकवर्ग कम — गोचर से अनुकूलता सहज नहीं मिलती, समय सोचकर चुनना होगा
• **विवाह के लिए सबसे बड़ा बल गुरु की दृष्टि है** — यह इस कुंडली की सबसे शुभ उपस्थिति है इस भाव पर

❖ ✦ ❖

जीवनसाथी की दिशा, स्वभाव व पहचान

अ ध्या य 4

सप्तम भाव कुम्भ राशि का है, सप्तमेश शनि हैं — इन दोनों से जीवनसाथी का स्वरूप उभरता है। ऊपर बताई शुक्र की स्थिति भी इसमें जुड़ती है।

कुम्भ राशि से जीवनसाथी का स्वभाव

कुम्भ राशि सप्तम में होने का अर्थ है कि जीवनसाथी स्वतंत्र विचारों वाले, थोड़े अपरंपरागत और बौद्धिक होंगे। वे दिखावे में कम, सार में अधिक विश्वास करेंगे। कुम्भ की प्रकृति मानव-सेवा, सामाजिक विचार और एक निश्चित तटस्थता की होती है — आपका जीवनसाथी भावुकता में बह जाने वाला नहीं होगा, बल्कि तर्कशील व समझदार होगा।

शनि सप्तमेश होने से जीवनसाथी में एक **परिपक्वता, जिम्मेदारी और व्यावहारिकता** होगी। वे उम्र में आपसे थोड़े बड़े हो सकते हैं, या व्यवहार में परिपक्व — कच्चे या चंचल नहीं।

गुरु की दृष्टि से गुण

लग्न में बैठे गुरु सप्तम को देख रहे हैं — यह बताता है कि **जीवनसाथी में एक सहजता, विद्या का प्रेम और नैतिकता होगी।** वे धर्म-परंपरा को मानने वाले हो सकते हैं, या किसी न किसी रूप में ज्ञान-मार्ग से जुड़े।
शनि मकर में छठे भाव से सप्तम को स्वामित्व देते हैं — यह संकेत करता है कि **जीवनसाथी से मेल किसी व्यावहारिक संदर्भ में हो सकता है** — कार्यस्थल, सामाजिक कार्य, या किसी साझा ज़िम्मेदारी के माध्यम से। यह कोई ऐसा रिश्ता नहीं होगा जो पहली नज़र में फ़िल्मी रोमांस की तरह शुरू हो।

बारहवें भाव में शुक्र यह भी कहते हैं कि **जीवनसाथी दूसरे शहर, क्षेत्र या पृष्ठभूमि से हो सकते हैं** — या परिवार के सामान्य दायरे से थोड़ा अलग।

मुख्य बातें

- **जीवनसाथी परिपक्व, स्वतंत्र विचारों वाले, बौद्धिक और व्यावहारिक होंगे**
- कुम्भ राशि का स्वभाव — तटस्थ, सामाजिक, थोड़े अपरंपरागत
- गुरु की दृष्टि — जीवनसाथी में नैतिकता, शालीनता और ज्ञान का प्रेम
- मेल किसी व्यावहारिक संदर्भ में होने की सम्भावना — फ़िल्मी प्रेम की राह नहीं
- **जीवनसाथी भावनाओं में डूबने वाले नहीं, पर जब वे साथ होंगे तो टिककर साथ देंगे**

❖ ✦ ❖

नवांश (D9) से दाम्पत्य-सुख का विचार

अध्याय 5

नवांश कुंडली विवाह व दाम्पत्य-सुख का सबसे गहरा दर्पण है — जन्म-कुंडली जो बाहर दिखती है, नवांश वह बताता है जो भीतर है।

नवांश का लग्न व सप्तमेश

आपका नवांश लग्न कन्या है। नवांश में सप्तम भाव मीन होगा — और वहाँ **चंद्र मीन राशि में** बैठे हैं। मीन राशि में चंद्र उच्च के निकट हैं — यह अत्यंत शुभ संकेत है। इसका अर्थ है कि **दाम्पत्य-जीवन में भावनात्मक गहराई, संवेदनशीलता और एक आध्यात्मिक बंधन होगा।** नवांश सप्तम में उच्च-निकट चंद्र — यह जन्म-कुंडली की सप्तमेश शनि की कठिनाई को काफ़ी हद तक संतुलित करता है।

नवांश में गुरु — सबसे बड़ा बल

नवांश में गुरु कन्या लग्न में ही बैठे हैं — नवांश लग्नेश बुध के साथ घर में। यह गजकेसरी जैसा प्रभाव नवांश में भी देता है। नवांश में बलवान गुरु यह कहते हैं कि **विवाह के बाद जीवन में एक विस्तार, स्थिरता और धर्म-भावना आएगी।** जीवनसाथी के साथ वैचारिक संगति होगी।

नवांश में शुक्र — सावधानी का संकेत

नवांश में शुक्र सिंह राशि के बारहवें भाव में हैं — जन्म-कुंडली की तरह यहाँ भी शुक्र बारहवें भाव में हैं। यह दोहराव बताता है कि **रोमांटिक सुख, शारीरिक सौंदर्य और विलास का विषय इस जन्म में आपके लिए सहज नहीं है।** दाम्पत्य का आनंद भावनात्मक गहराई और साझा समझ से आएगा — दिखावे और चमक-दमक से नहीं।

नवांश में मंगल व केतु — वृश्चिक में

नवांश के तीसरे भाव में मंगल और केतु दोनों वृश्चिक राशि में हैं। मंगल स्वराशि में बलवान हैं यहाँ। तीसरे भाव में यह युति साहस और तेज़ी देती है, पर दाम्पत्य में **केतु का यह स्थान कभी-कभी एक अलगाव या संवाद में अंतर** ला सकता है — यह देखने वाली बात है।

मुख्य बातें

- **नवांश सप्तम में चंद्र मीन में** — दाम्पत्य में भावनात्मक गहराई व संवेदनशीलता; जन्म-कुंडली की कठिनाई का संतुलन
- **नवांश लग्न में गुरु** — विवाह के बाद जीवन में स्थिरता, वैचारिक संगति और विस्तार
- नवांश में भी शुक्र बारहवें — दाम्पत्य का सुख बाहरी चमक से नहीं, भीतरी जुड़ाव से आएगा
- नवांश में मंगल-केतु की युति — संवाद व समझ पर ध्यान देना आवश्यक होगा
- **कुल मिलाकर**: नवांश आशाजनक है — चंद्र और गुरु की स्थिति बताती है कि **विवाह होने के बाद दाम्पत्य-जीवन जन्म-कुंडली से अधिक सुखद होगा**

❖ ✦ ❖

विवाह का समय — दशा व गोचर से

अ ध्या य 6

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में विवाह का समय पूछना स्वाभाविक है — और इस प्रश्न का उत्तर दशा, गोचर और सप्तम भाव तीनों को मिलाकर ही निकलता है।

अभी चल रही दशा क्या कह रही है

अभी सूर्य महादशा में शनि अंतर्दशा चल रही है — फरवरी 2026 से फरवरी 2027 तक। शनि आपके सप्तमेश हैं — यानी जीवनसाथी और विवाह के सीधे कारक। उनकी अंतर्दशा का आना विवाह के विषय को सक्रिय करती है। लेकिन शनि छठे भाव में बैठे हैं, जो बाधा और देरी का भाव है। इसलिए यह दशा विवाह की तैयारी और प्रयास का काल है — तत्काल परिणाम का नहीं। इस समय बात आगे बढ़ सकती है, परिवारों में चर्चा हो सकती है, पर अंतिम निर्णय तक पहुँचने में थोड़ा धैर्य चाहिए।

योगिनी दशा में अभी भद्रिका-सिद्धा चल रही है — मार्च 2026 से फरवरी 2027 तक। सिद्धा का स्वामी शुक्र है — और शुक्र विवाह के नैसर्गिक कारक हैं। यह संयोग शुभ है, पर शुक्र आपकी जन्म-कुंडली में बारहवें भाव में अस्त हैं — इसलिए यह संकेत **शुभ पर मिश्रित** है। कोशिश रंग ला सकती है, गारंटी नहीं।

अगला महत्वपूर्ण मोड़ — फरवरी 2027 से

फरवरी 2027 से सूर्य-बुध अंतर्दशा आरंभ होगी। बुध आपके ग्यारहवें और दूसरे भाव के स्वामी हैं — लाभ और परिवार के कारक। बुध की दशा में सामाजिक संपर्क, परिचय और पारिवारिक मेल-मिलाप बढ़ते हैं। उस समय आप लगभग 35 वर्ष के होंगे। यह काल विवाह की बात पक्की होने के लिए अधिक अनुकूल दिखता है।

इसके बाद **अप्रैल 2028 से सूर्य-शुक्र अंतर्दशा** आएगी — और यही काल सबसे महत्वपूर्ण है। शुक्र विवाह के नैसर्गिक कारक हैं और सप्तम भाव के भाव-कारक भी। जन्म में भले अस्त हों, दशा में आने पर उनका असर दिखता है। **अप्रैल 2028 से अप्रैल 2029 — यह विवाह का सबसे संभावित काल है।** उस समय आपकी आयु लगभग 36 वर्ष होगी।

गोचर से समय की पुष्टि

गुरु अभी सिंह राशि में हैं — आपके पहले भाव में — और जनवरी 2027 तक वहीं रहेंगे। लग्न पर गुरु की यह उपस्थिति व्यक्तित्व और आत्मविश्वास को बल देती है। **गुरु की सप्तम भाव पर सीधी दृष्टि है** — यह विवाह के लिए एक शुभ संकेत है। साथ ही गुरु पाँचवें भाव को भी देख रहे हैं जो प्रेम और पूर्व-पुण्य का भाव है।

जब गुरु कन्या राशि में आएँगे — जनवरी 2027 के बाद — तब वे आपके दूसरे भाव (परिवार) में होंगे, जो विवाह की बात को पारिवारिक

स्तर पर पक्का करने का योग देता है।

शनि अभी मीन राशि में, आपके आठवें भाव में हैं — जून 2027 तक। यह थोड़ी धीमी गति का कारण है। **जून 2027 के बाद शनि मेष में आएँगे** और नवम भाव में पहुँचेंगे — उस समय से विवाह की राह सुगम होगी।

मुख्य बातें

- अभी शनि अंतर्दशा — प्रयास का काल, परिणाम का नहीं
- फरवरी–दिसम्बर 2027 में बुध अंतर्दशा — परिचय व बात पक्की होने का समय
- **अप्रैल 2028 से अप्रैल 2029 — शुक्र अंतर्दशा — विवाह का सबसे संभावित काल**
- गुरु की सप्तम पर दृष्टि अभी शुभ संकेत दे रही है
- जून 2027 के बाद शनि का राशि-परिवर्तन बाधाएँ घटाएगा

❖ ✦ ❖

मंगल दोष व अन्य बाधक योग

अ ध्या य 7

अभय शर्मा जी, मंगल दोष का नाम सुनते ही बहुत लोग घबरा जाते हैं — पर सच यह है कि यह एक प्रवृत्ति है, दंड नहीं। आपकी कुंडली को ध्यान से देखती हूँ।

मंगल दोष — है या नहीं?

पराशरी परंपरा में मंगल दोष तब माना जाता है जब मंगल लग्न, चंद्र या शुक्र से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में हों।

आपकी कुंडली में **मंगल नवम भाव में हैं — मेष राशि में, अपनी स्वराशि में।** लग्न से नवम भाव इस सूची में नहीं आता, इसलिए **लग्न से मंगल दोष नहीं बनता।**

चंद्र से गिनें — चंद्र वृश्चिक राशि में हैं (चतुर्थ भाव)। मंगल नवम भाव में हैं जो चंद्र से गिनने पर छठा स्थान बनता है — वह भी इस सूची में नहीं। **चंद्र से भी मंगल दोष नहीं।**

शुक्र बारहवें भाव में हैं। मंगल नवम में हैं — शुक्र से गिनने पर दसवाँ स्थान। **शुक्र से भी दोष नहीं।**

निष्कर्ष: आपकी कुंडली में पराशरी नियम से मंगल दोष नहीं बनता। यदि किसी ने आपको यह बताया है तो वे किसी और पद्धति से देख रहे थे — हमारी गणना में यह दोष नहीं है।

विवाह में वास्तविक बाधाएँ क्या हैं

मंगल दोष न हो, तो क्या विवाह सरल है? जरूरी नहीं। बाधाएँ हैं, पर वे अलग कारणों से हैं:

पहली बाधा — सप्तमेश शनि का छठे भाव में होना। विवाह के स्वामी जब रोग-शत्रु-बाधा के भाव में बैठें, तो विवाह में देरी और परीक्षाएँ आती हैं। शनि वक्री भी हैं — उनका फल देर से और अपने ढंग से आता है। हर्ष विपरीत राजयोग की दृष्टि से यह अंततः शुभ है, पर मार्ग सहज नहीं।

दूसरी बाधा — शुक्र का बारहवें भाव में अस्त होना। शुक्र विवाह के नैसर्गिक कारक हैं। वे आपकी कुंडली में शत्रु राशि में, बारहवें भाव (व्यय, एकांत) में हैं और अस्त भी। उनका बल और अवस्था दोनों दबे हुए हैं — मृत अवस्था में उनका फल नगण्य है। **यही सबसे बड़ा कारण है कि विवाह में विलंब हो रहा है।**

तीसरी बात — मंगल की चतुर्थ दृष्टि बारहवें भाव पर पड़ रही है जहाँ शुक्र और बुध दोनों बैठे हैं — यह शुक्र पर और दबाव डालती है।

नवांश (D9) में बाधा का आकलन

नवांश में शुक्र सिंह राशि के बारहवें भाव में हैं — यह भी व्यय और त्याग का स्थान है। D9 में भी शुक्र की स्थिति सहज नहीं। इसका अर्थ यह है कि विवाह का सुख पाने के लिए धैर्य और प्रयास दोनों चाहिए — पर D9 के सप्तम भाव में चंद्र उच्च के निकट मीन राशि में हैं, जो दाम्पत्य-सुख का सुंदर संकेत है।

मुख्य बातें

- **मंगल दोष पराशरी नियम से नहीं बनता** — न लग्न से, न चंद्र से, न शुक्र से
- असली बाधा: सप्तमेश शनि का छठे भाव में होना और शुक्र का अस्त व बारहवें भाव में होना
- मंगल की दृष्टि बारहवें भाव पर शुक्र को और दबाती है
- नवांश में शुक्र की स्थिति भी सहज नहीं — पर D9 के सप्तम में चंद्र शुभ हैं
- **यह दोष नहीं, प्रवृत्ति है — और इसका समाधान है**

❖ ✦ ❖

प्रेम-विवाह व व्यवस्थित विवाह योग

अ ध्या य 8

अभय शर्मा जी, यह प्रश्न बहुत व्यावहारिक है — विवाह प्रेम से होगा या परिवार की पसंद से? कुंडली इस बारे में कुछ संकेत देती है।

पाँचवाँ भाव — प्रेम का भाव

पाँचवाँ भाव प्रेम, भावनात्मक लगाव और आकर्षण का भाव है। आपके पाँचवें भाव में **राहु बैठे हैं — धनु राशि में।** राहु का पाँचवें भाव में होना प्रेम-सम्बन्धों में तीव्रता, असाधारण आकर्षण और कभी-कभी भ्रम भी लाता है। **गुरु की दृष्टि पाँचवें भाव पर है** — जो इस भाव को एक सँभाल देती है और प्रेम को केवल आवेग नहीं, बल्कि समझदारी से जोड़ती है। सूर्य की भी दृष्टि पाँचवें पर है — ग्यारहवें भाव से।

पाँचवें भाव का स्वामी गुरु है, और वे लग्न में बैठे हैं — मित्र राशि में, युवा अवस्था में, पूरे बल के साथ। यह पंचमेश का लग्न में होना प्रेम-प्रवृत्ति को व्यक्तित्व का हिस्सा बनाता है। आप गहराई से जुड़ने वाले स्वभाव के हैं — यह कुंडली कहती है।

क्या प्रेम-विवाह का योग है?

प्रेम-विवाह के लिए पाँचवें और सातवें भाव का आपसी सम्बन्ध, या उनके स्वामियों का जोड़, देखा जाता है। यहाँ पाँचवें और सातवें — दोनों के स्वामी **शनि और गुरु** हैं। गुरु पहले भाव में हैं, शनि छठे में — दोनों में सीधा सम्बन्ध नहीं बनता। **इसलिए प्रेम-विवाह का योग स्पष्ट नहीं है — पर प्रेम-परिचय से बात शुरू होने की संभावना से इनकार भी नहीं।**

राहु पाँचवें भाव में होने से किसी असाधारण परिस्थिति, अप्रत्याशित मुलाकात या भिन्न पृष्ठभूमि के व्यक्ति से आकर्षण संभव है। पर राहु-प्रेम में स्थिरता की परीक्षा होती है।

व्यवस्थित विवाह — अधिक संभावित

सप्तमेश शनि का स्वभाव, कुम्भ राशि का सप्तम भाव, और शुक्र का व्यय-भाव में अस्त होना — ये सब मिलकर **व्यवस्थित विवाह को अधिक स्वाभाविक मार्ग** बनाते हैं। शनि परंपरा, अनुशासन और परिवार की स्वीकृति को महत्व देते हैं। नवांश में सप्तम भाव मीन और वहाँ चंद्र — यह भावनात्मक गहराई का संकेत है जो व्यवस्थित विवाह में भी खूब मिल सकती है।

सबसे उपयुक्त मार्ग यह हो सकता है: परिचय किसी माध्यम से हो — पर पसंद आपकी अपनी। यानी न पूरी तरह परिवार का थोपा, न पूरी तरह अकेले का निर्णय।

मुख्य बातें

- पाँचवें भाव में राहु — प्रेम में तीव्रता, पर स्थिरता की परीक्षा
- पंचमेश गुरु लग्न में बलवान — गहरे जुड़ाव की प्रवृत्ति स्वभाव में है
- **गुरु की दृष्टि पाँचवें और सातवें दोनों भावों पर — यह विवाह को शुभता देती है**
- प्रेम-विवाह का स्पष्ट योग नहीं, पर परिचय से प्रेम होकर विवाह — संभव
- **व्यवस्थित विवाह इस कुंडली में अधिक स्वाभाविक और टिकाऊ मार्ग है**

❖ ✦ ❖

दाम्पत्य सामंजस्य, प्रेम व सुख

अ ध्या य 9

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में दाम्पत्य-सुख की नींव कमज़ोर नहीं है — बस उसे थोड़ा धैर्य और समझ की ज़रूरत है। गहराई से देखें तो कुछ ऐसे योग हैं जो सच्चे और टिकाऊ रिश्ते की ज़मीन बनाते हैं।

नवांश में चंद्र — भावनात्मक गहराई का वरदान

नवांश कुंडली विवाह के असली रंग दिखाती है। आपके नवांश के सप्तम भाव में चंद्र मीन राशि में हैं — यह अत्यंत शुभ स्थिति है। **इसका सीधा अर्थ है कि आपका जीवनसाथी भावनात्मक रूप से संवेदनशील, सहृदय और समझदार होगा।** रिश्ते में भावनाओं का आदान-प्रदान सहज होगा — बात कहे बिना भी समझने वाला साथी मिलने की संभावना है। नवांश में यह स्थिति बताती है कि विवाह के बाद मन का सुकून आएगा, भले ही शुरुआत में थोड़ा समय लगे।

गजकेसरी योग — दाम्पत्य में गरिमा व सम्मान

आपकी कुंडली में **गजकेसरी योग** है — चंद्र से केंद्र में गुरु। यह योग यश, बुद्धि और समाज में सम्मान देता है। दाम्पत्य जीवन में इसका अर्थ है कि आपका विवाह एक ऐसे साथी से होगा जो आपको समाज में प्रतिष्ठा दिलाने में सहायक बनेगा। साथ ही गुरु की दृष्टि सप्तम भाव पर सीधी पड़ रही है — **गुरु की यह दृष्टि विवाह-भाव को शुभता और स्थिरता देती है।** यह दृष्टि किसी भी कठिनाई को पूरी तरह हावी नहीं होने देती।

केतु की दृष्टि सप्तम पर — गहरा, आत्मीय बंधन

सप्तम भाव पर केतु की दृष्टि भी है। यह दृष्टि रिश्ते को सतही नहीं रहने देती — इसमें एक अदृश्य गहराई आती है। **आपका दाम्पत्य केवल सामाजिक दिखावे का नहीं, भीतर से जुड़े दो मनों का रिश्ता होगा।** हाँ, इसके साथ यह भी ध्यान रहे कि केतु की दृष्टि कभी-कभी "कहने में कठिनाई" लाती है — जो मन में हो वह साथी तक पहुँचाना थोड़ा मुश्किल हो सकता है।

वेशी योग व आपका स्वभाव — साथी को क्या मिलेगा

आपकी कुंडली में **वेशी योग** है जो सत्यनिष्ठा और परोपकारिता देता है। आप रिश्ते में ईमानदार और विश्वसनीय साथी बनेंगे — यही किसी भी विवाह की सबसे बड़ी पूँजी है। लग्न में गुरु की उपस्थिति आपको स्वभाव से उदार और बड़े दिल वाला बनाती है।

मुख्य बातें

• नवांश में चंद्र मीन राशि में — जीवनसाथी भावनात्मक रूप से सहृदय व समझदार
• गुरु की सप्तम पर सीधी दृष्टि — विवाह-भाव को शुभता और टिकाऊपन
• गजकेसरी योग — दाम्पत्य में गरिमा व सामाजिक प्रतिष्ठा
• वेशी योग — आप स्वयं ईमानदार व विश्वसनीय साथी होंगे
• केतु की दृष्टि — रिश्ते में आत्मीय गहराई, पर भावनाएँ खुलकर कहने का अभ्यास ज़रूरी

❖ ✦ ❖

संभावित चुनौतियाँ व सावधानियाँ

अध्याय 10

हर कुंडली में कुछ चुनौतियाँ होती हैं — ये दंड नहीं, सचेत करने वाले संकेत हैं। अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली जो बाधाएँ दिखाती है उन्हें जानकर चलना ही सबसे बड़ी तैयारी है।

सप्तमेश शनि छठे भाव में — देरी और परीक्षाएँ

सप्तमेश शनि अपनी स्वराशि मकर में बलवान हैं, पर छठे भाव में बैठे हैं जो बाधा, शत्रु और रोग का भाव है। **इसका व्यावहारिक अर्थ है कि विवाह में देरी होती है, और रिश्ते बनने से पहले कुछ परीक्षाएँ आती हैं।** छठे भाव का शनि यह भी कह सकता है कि साझेदारी में कभी-कभी "कर्तव्य बनाम इच्छा" का द्वंद्व आए — रिश्ता ज़िम्मेदारी की तरह लगने लगे, आनंद की तरह नहीं। इस पर सचेत रहना ज़रूरी है।

शुक्र अस्त — प्रेम और कोमलता की अभिव्यक्ति में बाधा

शुक्र विवाह और प्रेम के कारक हैं, और आपकी कुंडली में वे बारहवें भाव में अस्त हैं। **अस्त शुक्र का अर्थ है कि प्रेम-भावनाएँ भीतर हैं, पर उन्हें व्यक्त करना कठिन लग सकता है।** साथी को यह लग सकता है कि आप दूरी बना रहे हैं जबकि वास्तव में आप भीतर से जुड़े हुए हैं। यह सबसे आम दाम्पत्य-कलह का कारण बन सकता है — इसलिए भावनाएँ कहने का अभ्यास जानबूझकर करना होगा।

चंद्र नीच — मन की उथल-पुथल

चतुर्थ भाव में चंद्र नीच राशि में हैं। चतुर्थ भाव घर, सुख और मानसिक शांति का है। **यह स्थिति बताती है कि मन में एक अंदरूनी बेचैनी रह सकती है — कभी घर का माहौल, कभी माता से सम्बंध, कभी अपने भीतर की असंतुष्टि।** दाम्पत्य में यह बेचैनी साथी पर निकल सकती है। इसका उपाय यह है कि मन की बात साथी से खुलकर कहें — दबाकर रखना रिश्ते को धीरे-धीरे कमज़ोर करता है।

राहु की दृष्टि लग्न पर — अपेक्षाओं में स्पष्टता ज़रूरी

गोचर में राहु की दृष्टि जन्म-लग्न पर पड़ रही है। यह भ्रम और अनिश्चितता का समय हो सकता है — **विवाह या किसी रिश्ते के बारे में बड़े निर्णय लेते समय अपेक्षाएँ एकदम साफ़ रखें, किसी भी दबाव में जल्दी हाँ या ना मत करें।**

मुख्य बातें

- सप्तमेश शनि छठे भाव में — विवाह में देरी और कर्तव्य-बनाम-आनंद का द्वंद्व सम्भव
- शुक्र अस्त बारहवें भाव में — भावनाएँ भीतर हैं, पर कहना कठिन लग सकता है; जानबूझकर अभिव्यक्ति का अभ्यास करें
- नीच चंद्र चतुर्थ में — मन की बेचैनी दाम्पत्य पर न निकले, साथी से बात करते रहें
- राहु की दृष्टि लग्न पर — इस समय बड़े रिश्ते-निर्णयों में स्पष्टता ज़रूरी
- ये बाधाएँ दंड नहीं — इन्हें जानकर चलना ही सबसे बड़ी तैयारी है

❖ ✦ ❖

सुखी दाम्पत्य हेतु ज्योतिषीय उपाय

अ ध्या य 1 1

अभय शर्मा जी, उपाय तभी काम करते हैं जब वे आपकी अपनी कुंडली से निकले हों — सबको दिए जाने वाले नहीं। यहाँ तीन असली कारणों के तीन उपाय हैं।

पहला — शुक्र को जगाएँ: प्रेम कहना सीखें

ऊपर देखा कि शुक्र अस्त हैं और बारहवें भाव में हैं। इसका उपाय पूजा से पहले दिनचर्या में है।

रोज़ एक छोटी बात साथी, परिवार या किसी प्रिय को कहें — कृतज्ञता की, स्नेह की। यह अभ्यास शुक्र को सबसे ज़्यादा बल देता है। घर में सौंदर्य और सुव्यवस्था रखें — साफ़-सफ़ाई, थोड़ी सजावट। शुक्र का यह स्वभाव है।

इसके साथ **शुक्रवार को लक्ष्मी उपासना और श्रीसूक्त का पाठ** करें — यह शुक्र की भक्ति-परंपरा है। श्रद्धा से करने पर मन को कोमलता और राहत मिल सकती है।

दूसरा — शनि को साधें: धैर्य ही आपका सबसे बड़ा उपाय है

सप्तमेश शनि छठे भाव में हैं — वे आपके विवाह के स्वामी हैं। **शनि का सबसे बड़ा उपाय है समय की पाबंदी और एक काम रोज़ बिना नागा।** जो वादा करें, निभाएँ — साथी से, परिवार से, स्वयं से। शनि यही देखते हैं।

हर शनिवार को किसी ज़रूरतमंद की सचमुच मदद करें — कौवे या काले कुत्ते को रोटी देना शनि की सेवा-परंपरा है। **शनिवार को**

हनुमान चालीसा और शिव उपासना भी करें — शनि और शिव का सम्बंध शास्त्र में गहरा है। श्रद्धा से करने पर मन में स्थिरता आती है।

तीसरा — चंद्र को शांत करें: मन सँभला तो घर सँभला

नीच चंद्र चतुर्थ में हैं और बारहवें भाव के स्वामी भी — इसलिए मन की देखभाल सबसे ज़रूरी है।

सोने और जागने का समय पक्का करें — यह चंद्र का सबसे बड़ा उपाय है। रात को सोने से पहले मन की बात एक पंक्ति लिख लें — डायरी में या बस मन-ही-मन। सोमवार को शिव-जलाभिषेक और **शिव उपासना** करें — चंद्र की भक्ति-परंपरा यही है।

इसके अलावा — **माणिक रत्न** आपका जीवन-रत्न भी है और इस समय सूर्य महादशा भी चल रही है, इसलिए यह अभी और भी उपयुक्त है। सूर्य भाव 11 में अच्छी स्थिति में हैं — माणिक उनकी दबी आवाज़ ऊपर लाएगा, आत्मविश्वास और दिशा देगा। इसे आप हमारे अपने कौस्तुभ जेम्स (koustubhgems.com) से ले सकते हैं — हर पत्थर प्रयोगशाला-प्रमाणित है। धातु, अँगुली और दिन का विवरण वहाँ 💎 रत्न-पन्ने पर मिल जाएगा।

मुख्य बातें

- शुक्र उपाय — रोज़ भावनाएँ कहने का अभ्यास; शुक्रवार को लक्ष्मी उपासना व श्रीसूक्त
- शनि उपाय — समय की पाबंदी, वादे निभाना; शनिवार को हनुमान चालीसा, शिव उपासना, सेवा
- चंद्र उपाय — नींद का समय पक्का; सोमवार को शिव-जलाभिषेक
- माणिक — इस समय सबसे उपयुक्त रत्न, जीवन-रत्न भी और दशानाथ का भी
- तीनों उपाय सरल हैं — कल से ही शुरू हो सकते हैं

अंत में — आपके लिए

अभय शर्मा जी, इस पूरी रिपोर्ट में आपकी कुंडली ने जो सबसे बड़ी बात कही वह यह है — विवाह आपके लिए कठिन नहीं, बस थोड़ा देर से और थोड़ा धैर्य माँगने वाला है। नवांश में उच्च चंद्र और गुरु की सप्तम पर दृष्टि — ये दोनों बताते हैं कि जब रिश्ता आएगा तो भावनात्मक गहराई वाला आएगा। सप्तमेश शनि की देरी से घबराइए नहीं — शनि जो देते हैं वह टिकाऊ होता है। और शुक्र के लिए बस एक काम — जो भीतर है वह कहना सीखिए, यही सबसे बड़ा उपाय है।

आप स्वभाव से ईमानदार और उदार हैं — वेशी योग और लग्न में गुरु यही कहते हैं। ये गुण किसी भी रिश्ते की सबसे मज़बूत नींव हैं। जो साथी आपके जीवन में आएगा, उसे यही मिलेगा — और यह बहुत बड़ी बात है। मेरी शुभकामनाएँ हैं कि आपका घर सुख और स्नेह से भरा रहे।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।
एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ विवाह योग रिपोर्ट ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।